पर्यावरण असंतुलन – एक चुनौती

[1]डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह

भारत प्राचीन काल से ही प्रकृति का उपासक रहा है। हमारे ऋशि, मुनि एवं मनीशियों ने पर्यावरणीय असुन्तलन को दूर करने के लिये ही मंत्रों एवं ऋचाओं के माध्यम से भारतीय जनमानस को प्रकृति पूजा का मंतव्य दिया था। सभी धार्मिक अनुश्ठानों एवं प्रार्थना मंत्रों में यजुर्वेद का यह मंत्र प्रकृति के संतुलन का ही मंतव्य होता है –

ऊँ द्यौः शान्तिः अन्तरिक्षम् शान्तिः
पृथ्वी शान्तिः अपः शान्तिः औषधयः शान्तिः
वनस्पतयः शान्तिः विश्वेदेवा शान्तिः
ब्रहम्मः शान्तिः सर्वशान्तिः शान्ति रेव शान्तिः
स मा शान्तिरेधि।

अर्थात आका ा, अन्तरिक्ष, पृथ्वी, अग्नि, वायुमण्डल, औशधियाँ, वनस्पतियाँ, जल सभी भाान्तिमय हों। समस्त ज्ञानीजन, ई वर और वेद भाान्तिमय रहें। भाान्ति स्वयं भी भाान्तिमय रहें तथा मुझे भी भाान्ति की प्राप्ति हो। किन्तु इस संस्थिति के बिल्कुल प्रतिकूल आज व्यक्ति न स्वयं भाान्ति से है न प्रकृति को ही भाान्ति से रहने दे रहा है। प्रकृति का दोहन करना उसकी नियति बनती जा रही है। पेड़–पौधों, औशधियों का विना ा व्यक्ति अपने लालसा की तृप्ति एवं भौतिकवादी कहलाने के लिये कर रहा है। प्रकृति की अपनी एक सीमा है। सीमा से अधिक दोहन पर उसका दुश्परिणाम तो उत्पन्न ही होगा। परिणामतः प्रकृति में असन्तुलन, भू–क्षरण, बाढ़, भूकम्प, चक्रवात, तूफान, बेमौसमी गर्मी, जाड़ा, बर्शा, दूशित वायु, दूशित जल व वि वव्यापी तापमान वृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग) इत्यादि देखने को मिल रहा है।

आज मानव विज्ञान एवं तकनीकी के माध्यम से जीवन चक्र को बदलने पर तुला है। अब वह केवल रोटी, कपड़ा और मकान के लिये जीवित नहीं रहना चाहता बल्कि प्राकृतिक आव यकता के साथ–साथ सामाजिक व आर्थिक उन्नति भी चाहता है। अपने सुख–साधनों के लिये मानव स्वयं पारिस्थितिकी तंत्र एवं पर्यावरण को विध्वंस करता जा रहा है। पारिस्थितिकी प्रकृति की एक ऐसी देन है जो स्वतः संतुलित होकर पर्यावरण को बनायें रखती है, जिस प्रकार व्यक्ति के भारीर पर लगा चोट का घाव धीरे–धीरे भर जाता है उसी प्रकार प्रकृति दोहन के उपरान्त ही पर्यावरण संतुलन कायम हो जाता है, किन्तु मानव की विध्वंसात्मक गतिविधियां प्रकृति के इस चक्र में अवरोध उत्पन्न कर रही हैं। इतना ही नहीं मानव जिन्हें अपनी विकासात्मक क्रिया समझ रहा है, वह उसके अस्तित्व को संकट के घेरे में डाल रही है। आज कारखानों तथा मोटरवाहनों आदि से निकली विशैली गैसें पृथ्वीवासियों के जीवन में जहर घोल रहीं हैं तथा पूरी पृथ्वी पर ग्रीन हाउस का खतरा मंडरा रहा है। यदि मानव ने अपनी स्वार्थसिद्ध के लिये यह प्रक्रियायें जारी रखी तो न सिर्फ मानव मात्र वरन संपूर्ण जीवमंडल के लिये महाकाल को निमंत्रण देने जैसी स्थिति पैदा हो जायेगी। अतः इन चुनौतियों का सामना उसे अपने जीवन को खतरे में डाल कर तथा आने वाली पीढ़ी के लिये संघर्शपूर्ण वातावरण स्थापित करके करना पड़ेगा। इसका संक्षिप्त विवरण निम्नांकित है :

- ❖ पर्यावरण के असंतुलन से बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग के कारण वर्तमान समय में पूरे वि व में लगभग तीन अरब 20 करोड़ लोगों को पानी की समस्या का सामना करना पड़ रहा है तथा 2050 तक भारत दे ा में प्रति व्यक्ति 30 फीसदी पानी की कमी होगी यानी प्रति व्यक्ति 1000 क्यूसेक पानी ही मिलेगा जबकि वर्तमान में प्रति व्यक्ति 1,140 क्यूसेक पानी ही उपब्ध है।
- ❖ नदियों में जलापूर्ति के मुख्य स्त्रोत हिमनन्द तेजी से पिघलते हुये एक दिन खत्म हो जायेगें जिसकी वजह से एक ओर तो पेयजल संकट आयेगा वहीं दूसरी ओर जल स्तर 28–43 सेंटीमीटर तक बढ़ जायेगा।
- ❖ पृथ्वी का तापमान सिर्फ 4 डिग्री सेल्सियस बढ़ने से ही अकाल, बाढ़ व चक्रवाती तूफानों की संख्या में वृद्धि होगी।
- ❖ तापमान वृद्धि से जंगलों में आग लगाने का खतरा बढ़ जायेगा। इसके अलावा गर्म हवाओं का खतरा भी बढ़ेगा।
- ❖ मरूस्थलों से लकर ध्रुवीय प्रदे ाों तक वनस्पति व जीव–जंतुओं की अनेक प्रजातियों के लुप्त होने का खतरा है।
- ❖ वि व के बड़े खाद्यान्न उत्पादक दे ा भारत, चीन, अफ्रीका आदि अकालग्रस्त होंगे। फलस्वरूप वि व में खाद्यान्न उत्पादन में 50 फीसदी तक की कमी होगी तथा इतने बड़े पैमाने पर कमी आनेसे विस्थापन, युद्ध और भुखमरी का कारण बनेगी, जिसका ि ाकार लगभग 60 करोड़ आबादी हो सकती है।
- ❖ जलवायु परिवर्तन, भाहरीकरण, आर्थिक और औद्योगिकीकरण के कारण आर्थिक विकास में भी उतार–चढ़ाव आते रहेगें।
- ❖ हिमालय के ग्ले ि ायर पिघलने से ए ि ाया को 20–30 सालो में पानी की समस्या का सामना करना पड़ेगा। कई क्षेत्रों में बाढ़ से जूझना पड़ेगा। इससे भारत, चीन व नेपाल की सात नदियों पर संकट है। ऐसी संभावना है कि इन नदियों का जल स्तर पहले तो बढ़ेगा फिर तेजी से घटेगा। भू–स्खलन भी बढ़ेंगे।
- ❖ बाढ़ व सूखे के कारण अनेक संक्रामक रोग जैसे आंत्र ाोध, मलेरिया, डेंगू आदि फैलेंगे।
- ❖ पानी और बिजली की समस्या और अधिक बढ़ जायेगी। वर्तमान में ही ये न सिर्फ गांवों, कस्बों बल्कि कुछ महानगरों की ओर प्रवे ा कर चुका है।

इन समस्याओं का समाधान कैसे

प्रदूशण की समस्या बहुआयामी है और मानव जीवन के समूचे परिदृ य को अपने में समेटे हुये है। सभी के लिये यह एक महत्वपूर्ण चुनौती का कार्य है। 21वीं भाताब्दी का मानव एक विचित्र अन्तर्द्वन्द में फंस गया है। एक ओर निरन्तर बढ़ती जनसंख्या के उदर पोशण की समस्या, तो दूसरी ओर पेयजल का नित गहराता संकट। एक ओर जीवन स्तर के उन्नयन हेतु विविध उपयोग की वस्तुओं की प्रचुरता, दूसरी ओर भवास हेतु भाुद्ध वायु का अभाव। एक ओर अधिक उत्पादन हेतु सिंचित क्षेत्र का विस्तार की आव यकता, दूसरी ओर सिंचित भूमि में जल सिक्तता तथा लवण जमाव से उपजाऊ भूमि का संकुचन। ईंधन की पूर्ति के प्रयास में खाद्यपूर्ति स्त्रोत का क्षरण, विद्युत आपूर्ति की व्यवस्था में वि व के औसत तापमान में वृद्धि के कारण द्वीपों एवं समुद्री तटीय क्षेत्रों के डूब जाने का खतरा, विभिन्न बीमारियों का वरण और बहुत से अनगिनत दुश्परिणाम। अतः आज आव यकता है इन सभी चुनौतियों का सामना करने की, इनके बचाव उपक्रमों को अपनाने की, उन पर अमल करने की तथा उनसे मुक्ति पाने की।

यह सब तभी संभव है जबकि इसके लिये न सिर्फ भरसक प्रयास किये जाये वरन् उन्हें अपनाने तथा दैनिक जीवन में लागू करने की सफल कोि ा ा की जायें यथा–

- ❖ उर्जा की बढ़ती मांग की आपूर्ति हेतु विविध नव्यकरणीय साधनों से उर्जा उत्पादन के प्रयास के साथ ही उर्जा उपयोग में तकनीकी विधियों से कु ालता वृद्धि द्वारा बचत करना।
- ❖ विद्युत उपकरणों के रख–रखाव तथा संचालन प्रणाली में सुधार।
- ❖ विद्यमान उपकरणों में समुचित परिश्कार।
- ❖ कम उर्जा उपभोग करने वाली तकनीकों का उपयोग।
- ❖ उर्जा के उचित प्रयोग के लिये निर्माण संबंधी कड़े प्रावधान बनाने के साथ–साथ नवीनतम तकनीक–सौर पैनल, स्मार्ट मीटर आदि का प्रयोग।
- ❖ कोयला, पेट्रोलियम आदि जैसे जीव म ईधन की छूट पर कटौती करके कार्बन कर लागू करना।
- ❖ जहाँ तक सम्भव हो सीमित और संचित संसाधनों के स्थान पर ऐसे संसाधनों का उपयोग करना जो सतत् और नव्यकरणीय है, कोयला, पेट्रोल जैसे ऊर्जा स्त्रोत के स्थान पर जल विद्युत, बायोफ्यूल, स्वच्छ ऊर्जा आदि का प्रयोग करना।
- ❖ सड़क प्रदूशण घटाने के लिये सार्वजनिक परिवहन पर अधिक निवे ा करने के साथ–साथ उसके प्रयोग संबंधी कड़े नियमों को लागू करना।
- ❖ पुराने वाहनों के प्रयोग पर प्रतिबंध तथा व्यक्तिगत वाहनों के प्रयोग पर अधिक कर ताकि इनके प्रयोग कर संख्या में हो।
- ❖ रो ानी, सर्दी और गर्मी से बचाव के लिये ऐसी ऊर्जा की व्यवस्था करना जिससे ऊर्जा की बचत हो।
- ❖ वृक्ष संरक्षण तथा वृक्षारोपण के लिये कठिन मानकों का प्रयोग करना और इसके पालन के लिये आम जनता को प्रेरित करना।
- ❖ अपनी व्यक्तिगत जीवन ैली से सुख–सुविधा और विलासिता की धारणा का त्याग करना।
- ❖ सरकार को चाहिये कि उद्योगों में कार्बन–डाइ–आक्साइड की मात्रा घटाने पर बल दे तथा उत्सर्जन व्यापार के लिये कार्बन बाजार को प्रोत्साहित करें।
- ❖ अधिक आव यक किन्तु सीमित मात्रा में पाये जाने वाले पदार्थों के लिये विकल्प खोजने निमित्त वैज्ञानिक अनुसंधान करने का सतत् प्रयास किया जाना चाहिये जैसे घरेलू ईधन के लिये कम लकड़ी का उपयोग या उसके स्थान पर बायोगैस, सौर ऊर्जा आदि का उपयोग करने हेतु उपयुक्त चूल्हे अथवा संयन्त्रों के निर्माण की चेश्टा श्रेयस्कर है।

पर्यावरण शिक्षा की उपादेयता –

पर्यावरण के असंतुलन से बढ़ते दुश्प्रभावों ने पर्यावरण ि ाक्षा की उपादेयता की ओर भी हम सभी का ध्यान आकर्शित किया है। असंतुलित पर्यावरण समस्या के समाधान विशय पर वैि वक स्तर पर जारी गतिविधियों में यह बात अब धीरे–धीरे उभरकर आ रही है कि लोगों में पर्यावरण संचेतना जगाकर, उन्हें पर्यावरण के प्रति संवेदन ाील बनाया जाये। अपनी प्राकृतिक संपदा, संस्कृति एवं संसाधनों को सुरक्षित करना प्रत्येक राश्ट्र के लिये आव यक है ताकि वह अपनी भावी पीढ़ी को यह विरासत उनकी समृद्धि हेतु प्रदान कर सकें। इसके लिये विद्यालय, समाज, समुदाय, संस्थानों एवं सभी प्रतिश्ठानों की सहभागिता लेते हुये पर्यावरण ि ाक्षा के समग्र विकास की ओर ध्यान दिया जाना चाहिये क्योंकि पर्यावरण ि ाक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे हम अपने पर्यावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुये पारिस्थैतिकीय–असुन्तलन में

सुधार लाने तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एवं नवीन वैकल्पिक संसाधनों के अन्वेक्षण हेतु प्रतिबद्ध हो जाते हैं। वैि वक स्तर पर हुये सम्मेलनों में इन समस्याओं पर गंभीर विचार–विम र्ा के बाद पर्यावरण की समस्याओं हेतु पर्यावरण ि ाक्षा को इसका स्थायी और ठोस समाधान बताया गया है। भारत की राश्ट्रीय ि ाक्षा नीति 1986 में भी कहा गया है कि ''पर्यावरण के प्रति जागरूकता सभी बच्चों से लेकर समाज के सभी आयु वर्गों में फैलनी चाहिये।'' अतः पर्यावरण ि ाक्षा को ि ाक्षा के सभी स्तरों पर भाामिल किया जाना जरूरी है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि असंतुलित पर्यावरण संपूर्ण वि व की समस्या है। सभी राश्ट्र इसे गंभीरता से ले रहे हैं और प्रयत्न ाील है कि भू–उश्मीयकरण के प्रभावों से इसे कैसे बचाया जाये इसकी सार्थकता हेतु सरकारी स्तर पर किये गये प्रयासों के साथ आव यक है प्रत्येक मानव की भागीदारी अर्थात् मानवीय दायित्व, ताकि राश्ट्र के प्रत्येक नागरिक में इसके प्रति चेतना जागरूक हो क्योंकि हर गंभीर समस्या स्वयं उसके द्वारा ही निर्मित है। अतः इसका निवारण भी समय रहते उसी को करना होगा वरना न सिर्फ मानव वरन् संपूर्ण पृथ्वी की जीवंतता समाप्त हो जायेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- भार्गव, महेश (2007). भौक्षिक सरोवर, नवीनत संस्करण, राखी प्रका ान, आगरा।
- जीत, योगेन्द्र भाई (2006). ि ाक्षा में नवाचार और नवीन प्रवृत्तियाँ, अश्टम् संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृ0सं0 1–12
- मालवीय, राजीव (2009). ि ाक्षा के नूतन आयाम, द्वितीय संस्करण, भाारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,
- मिश्र समीरात्मज (2000). ''निबन्ध मंजूषा'', टाटा मैक ग्रा0 हिल0 पब्लि0, नई दिल्ली।
- पाण्डेय, राम ाक्ल एवं मिश्र, करुणा ांकर (1998). भारतीय शिक्षा की समसामयिकी समस्यायें, विनोद पुस्तक भण्डार, आगरा।
- उपाघ्याय, प्रतिभा (2009). भारतीय ि ाक्षा में उदयीमान प्रवृत्तियाँ, पांचवां सं ोधित संस्करण, भाारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृश्ठ सं0 174–176.
- वालिया, डॉ0 जे0 एस0 (2005). उदीयमान भारतीय समाज में ि ाक्षा, अहम् पाल पब्लि ार्ज, पंजाब, पृश्ठ सं0 220–243, 664–677.
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986). मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार (ि ाक्षा विभाग), नई दिल्ली।
- सिंह, मधुरिमा एवं श्रीवास्तव, नमिता (2007). ग्लोबल वार्मिंग–सभी के लिये चुनौती, भारतीय आधुनिक ि ाक्षा, जनवरी–अप्रैल (संयुक्तांक) वर्श 25, एन0 सी0 आर0 टी0, नई दिल्ली, पृश्ठ सं0 139–147.
- राजाराम, कल्पना (2009). निबन्ध बोध, पंद्रहवां सं ोधित संस्करण, स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा0लि0, नई दिल्ली, पृश्ठ सं0 300–302, 309–311.